B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – Pedagogy of History
Course – 7 (A)/Unit – 2(d)
Topic – पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धांत
(Principles of Curriculum Construction)
Lecture No. - 71

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

1. **बाल-केन्द्रीयता का सिद्धांत (Principle of Child Centrism)** - पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय बालकों की रूचियों, आवश्यकताओं, मनोवृत्तियों, क्षमताओं, योग्यताओं तथा वृद्धि एवं आयु आदि का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

2. **जीवन से संबंधित होने का साद्धांत (Prniciple of Relation with Life)** - पाठ्यक्रम में उन्ही विषयों को स्थान देना चाहिए जिनका बालक के जीवन से सीधा संबंध हो। परंपरागत पाठ्यक्रम की आलोचना इसलिय हो रही है क्योंकि इसका बालको के जीवन से कोई संबंध नहीं है।

3. **उपयोगिता का सिद्धांत (Principle of Utility)** - पाट्यचर्या में उन विषयों एवं क्रियाओं को स्थान मिलना चाहये जो बालक के वर्तमान एवं भावी जीवन के लिये उपयोगी हों। इस संबंध में नन ने लिखा है, साधारण मनुष्य सामान्यतः यह चाहता है कि उसके बच्चे केवल ज्ञान के प्रदर्शन के लिये कुछ व्यर्थ की बातें सीखें , किन्तु समग्र रूप से यह चाहता है कि उनको वे बातें सिखायी जायें जो भावी जीवन के लिये उपयोगी हों।

4. **रचनात्मक कार्यों के विकास का सिद्धांत (Principle of Developing Creative Activity)** - प्रत्येक बालक में किसी-न-किसी क्षेत्र में रचनात्मक कार्य करने की कुछ-न-कुछ योग्यता होती है। अतः पाठ्यचर्या में उन विषयों को स्थान मिलना चाहिए जो बालकों की रचनात्मक शक्तियों के विकास में सहायक हों। रेमण्ट महोदय के अनुसार, जो पाठ्यक्रम वर्तमान तथा भविष्य के लिये उपयुक्त है, उसमें निश्चित रूप से रचनात्मक विषयों के प्रति निश्चित सुझाव होना चाहिये।

5. **खेल एवं कार्य की क्रियाओं के अन्तर्सम्बन्ध का सिद्धांत (Principle of Inter-relation of Play and Work Acitvites)** - पाठ्यक्रम के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने की क्रियाओं की इतना रूचिकर बनाने का प्रयास होना चाहिये कि बालक ज्ञान को खेल समझकर प्रभावशाली ढ़ंग से ग्रहण करे। क्रो एवं क्रो का कथन है , जो लोग सीखने की प्रक्रिया को निर्देशित करते है , उनका उद्देश्य यह होना चाहये कि वे ज्ञानात्मक क्रियाओं की ऐसी योजना बनायें जिससे खेल के दृष्टिकोण को स्थान प्राप्त हो।

6. **जीवन संबंधी समस्त क्रियाओं के समावेश का सिद्धांत (Princple of Inclusion of All Life Activities)** - स्पेन्सर के अनुसार शिक्षा जीवन को पूर्णता प्रदान करता है। अतः पाठ्यक्रम में जीवन से संबंधित उन सभी क्रियाओं को स्थान मिलना चाहिये जिनसे बालक का शारीरिक , मानसिक , सामाजिक , राजनैतिक तथा नैतिक सभी प्रकार का विकास हो।

7. **जनतांत्रिक भावना के विकास का सिद्धांत (Principle of Development of Democratic Spirit)** - भारत ने जनतंत्र के सिद्धांत को स्वीकार किया है। अतः पाठ्यक्रम मे ऐसी क्रियाओं को स्थान मिलना चाहिये जिनके द्वारा बालकों में जनतंत्रीय भावनाओं एवं दृष्टिकोण का विकास हो।

8. **विकास की सतत प्रक्रिया का सिद्धांत (Principle of Continual Process of Evolution)** - किसी भी पाठ्यक्रम का निर्माण सदा के लिये नहीं होता है। उसमें समय के साथ परिवर्तन करने की आवश्यकता पड़ती है। क्रो एवं क्रो के अनुसार , वैज्ञानिक प्रगति, नवीन व्यावसायिक अवसर, राष्ट्रों के अधिक विस्तृत आपसी संबंध , प्ररगतिशील आदर्श एवं आकाँक्षाएँ यह माँग प्रस्तुत करती हैं कि शिक्षा के सिद्धांत और व्यवहार को ज्ञान, कुशलता एवं दृष्टिकोण के अनुकूल बनाया जाये।

To be Continued....